28.05.2019

धरोहर के झरोखे से

ब्रह्मा का 'kki

श्रीपत राय व भैरव प्रसाद गुप्त द्वारा संपादित कहानी पत्रिका के नववर्षांक 1957 में प्रकाशित ***हरिमोहन झा*** *की कहानी* ***"ब्रह्मा का शाप"*** *साहित्यानुरागियों के लिए प्रदर्शित की जा रही है–*

ब्रह्मलोक की बात है। ब्रह्मा कई प्रकार के मनुष्य गढ़ चुके थे। अब थोड़ी–सी मिट्टी बाकी रह गई थी। उससे अंतिम मनुष्य का निर्माण करना था। इसी बीच में ब्रह्मा को न जाने क्या सूझी कि उन्होंने थोड़ी–सी भंग चढ़ा ली। भंग थी तेज। आँखों में गुलाबी नशा छा गया था। जिस प्रकार शिवजी तांडव नृत्य करते हैं, उसी प्रकार वे 'भंडवा' नृत्य करने लगे। सृष्टिशाला के छोटे–बड़े भांड लुढ़कने लग गए। कितने उलटे–पलटे। कितने चकनाचूर हो गए। भंग की तरंग में ब्रह्मा को पता नहीं चला कि वे क्या कर रहे हैं। जब बड़ी देर के बाद उनको होश हुआ, तब उन्होंने देखा कि महान् अनर्थ हो गया है।

मनुष्य के मस्तिष्क में सिर्फ एक बूँद बुद्धि का अर्क डालना था, सो पूरा घड़ा ही उलट गया है। एक मटका द्वेष का जहर रखा हुआ था, सो वह मटका फूटकर काले हलाहल की धारा बहा रहा है। बुद्धि और विष दोनों एकार हो गंगा–जमुना का दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। और अंतिम मनुष्य बनाने के लिए जो मिट्टी शेष रह गई थी, वह उसी भयंकर मिश्रण में सनकर मानव की आकृति ग्रहण कर चुकी है।

अपनी यह भीषण सृष्टि देखकर ब्रह्म सिहर उठे। उनके चारों मुँह विवर्ण हो गए। परंतु अब हो ही क्या सकता था, मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा जो हो चुकी थी!

सद्यः निर्मित मनुष्य की छिद्रान्वेषिणी आँखें अंगारे–सी चमक रही थीं। उसने ब्रह्म की भर्त्सना करते हुए कहा–जनबा! क्या आपका एक मुँह से काम नहीं चल सकता था, जो आप चार–चार मुँह रखे हुए है? किस मुँह से आप अपने को मुखिया कहते हैं? चतुर्मुख बनते आपको शर्म नहीं आई? सच पूछिए तो आप मुँह दिखाने लायक नहीं हैं!

आपके मुँह अजागलस्तन की तरह किसी काम के नहीं हैं। इनसे अच्छा तो शंख का मुँह, जिसे फूँककर बजाया तो जा सकता है!

यह कहकर उसने ब्रह्मा की कूची छीन ली और उसमें कालिख चूना लगाकर उनकी ओर लपका।

ब्रह्मा सिर पर पैर रखकर भागे। छिद्रान्वेषी भी उनके पीछे लग गया। ब्रह्मा भागे–भागे इंद्र के दरबार में जा पहुँचे।

इंद्र ने पूछा– क्या बात है, बूढ़े बाबा!

ब्रह्मा ने कहा– महाराज! भंग की तरंग में मैंने एक विकट जीव की सृष्टि कर डाली है। वह भस्मासुर की तरह मेरे ही पीछे पड़ गया है।

तब तक छिन्द्रावेषी भी वहाँ पहुँच चुका था। इंद्र ने उससे पूछा– क्या बात है, जी?

उसने कहा–महाराज! बूढ़े बाबा की अक्ल सठिया गई है! किसी के लिए तो इन्हें दो आँखें नहीं जुड़ती और आपको इन्होंने सहस्त्राक्ष बना दिया है! यदि ये फालतू आँखें नेत्रदान यज्ञ में लगा देते, तो सैकड़ों अंधों और कानों का उपकार होता। परंतु इनकी आँखों पर तो जैसे जाल छाया हुआ है!

इंद्र ने कहा–हाँ, ये हजार आँखें तो सचमुच मुझे भी व्यर्थ भार स्वरूप मालूम होती हैं। इनकी मुझे जरूरत नहीं थी।

छिद्रान्वेषी ने कहा– महाराज! किसी की जरूरत ये थोड़े ही देखते हैं? बुढभस में जो मन आता है, कर देते हैं! मनुष्य को दो पाँव, गधे को चार पाँव, भौंरे को छः पाँव, मकड़े को आठ पाँव और गनगोआर को हजार पाँव! यह भी कोई हिसाब है! जैसे खेलवाड़ कर रहे हों! अगर इनको सरकारी रिलीफ बाँटने को दिया जाता तो...

इंद्र ने कहा– बात तो कुछ–कुछ ठीक जँचती है। जान पड़ता है कि बूढ़े बाबा को अनुपात का ज्ञान नहीं रहा।

छिद्रान्वेषी ने प्रोत्साहित होते हुए कहा–महाराज! सो, ज्ञान रत्तीभर इनको रहता, तो बगुले की टाँग उतनी बड़ी बनाते? ऊँट की गर्दन उतनी लंबी बनाते? अपने ही ऐरावत को देखिए न! उसके कान तो सूप–जैसे और आँखें जुगनू–सी और नाक इतनी

लंबी कि जमीन चूमती चलती है! भला यह भी कोई अनुपात है? इनसे तो कुम्हार अच्छा, जो एक तरीके से गढ़ता है।

इंद्र अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगे। यह देख छिद्रान्वेषी ने कहा– यह दाढ़ी–मूँछ गढ़ने की इन्हें क्या जरूरत थी? स्त्री को त्रिकेशी बनाया; पुरुष को पंचकेशी बनाने का क्या प्रयोजन था?

इंद्र ने कहा–अजी! बातें तुम पते की कहते हो! विधाता की कुछ बातें समझ में नहीं आतीं। जान पड़ता है, कई जगह इन्होंने भूलें की हैं।

छिद्रान्वेषी ने कहा– महाराज! यदि इनकी बेवकूफियाँ गिनाने लगूँ, तो चारों वेदों टप (पट) जाए। मधुवर्षिणी कोयल को इन्होंने काली–कलूटी बना दिया और मयूर को उतना ही सुंदर बनाकर उसमें कठोर कर्कश स्वर भर दिया। यदि चंदन के वृक्ष में फूल लगाते, तो कितना सुगंधित होता! ईख में फल लगाते तो कितना मीठा होता! लेकिन ये बातें इनके दिमाग में नहीं आईं। मीठे अनार का गूदा इन्होंने तीता कर दिया। शरीफा बनाया, तो गूदे से ज्यादा गुठलियाँ भर दीं। बेल के अंदर उतना लस्सा भरने की क्या जरूरत थी? केतकी पुष्प में उतना काँटा नहीं लगाते, तो इनका क्या बिगड़ता? गंगाजी में फूल नहीं और कीचड़वाली तलैया में कमल! इनकी बुद्धि को क्या कहा जाय? सच पूछिए तो ब्रह्म को ब्राह्मी घृत का सेवन करना चाहिए!

इंद्र ने ब्रह्मा की ओर देखते हुए कहा– लेकिन ये तो निपुण कलाकार माने जाते हैं!

छिद्रान्वेषी ने कहा–यदि ये सिद्धहस्त कारीगर रहते तो कटहल–बड़हल जैसे बेढंगे ऊबड़–खाबड़ फलों की रचना करते? जब इनका हाथ स्थिर रहता है, तब सीधा ताड़ का पेड़ बन जाता है। जब हाथ काँपने लगते हैं, टेढ़ा–मेढ़ा खजूर का पेड़ बन जाता है। ऊँट का एक अंक भी इनसे सीधा नहीं बन पाया। कुत्ते की पूँछ आज तक इनसे सीधी नहीं हुई।

इंद्र ने कहा– बाबा सीधे हैं।

छिद्रान्वेषी ने कहा– जितना सीधा आप समझते हैं, उतने सीधे ये नहीं हैं। यदि ये आपके शुभचिंतक रहते, तो वृत्रासुर की हड्डी उतनी मजबूत नहीं बनाते!

ब्रह्मा ने देखा कि यहाँ दाल गलनेवाली नहीं। तब वे चुपके शची महारानी के दरबार में जा पहुँचे। परंतु उनसे पहले ही छिद्रान्वेषी वहाँ पहुँच चुका था। शची महारानी अब प्रौढ़ावस्था की सीमा पर पहुँच रहीं थी। यह देख उसने कहा– देखिए, विधाता बिल्कुल अनाड़ी हैं। युवती का यौवन, जिस मिट्टी से गढ़ते हैं, उसे इन्हें खूब कड़ा सानना चाहिए। ये बुढ़ऊ ऐसी नरम मिट्टी से बनाते हैं कि वह थोड़े ही दिनों में ढीला पड़ जाता है।

शची महारानी कुछ संकुचित होकर अपने आँचल की ओर निहारने लगीं।

छिद्रान्वेषी ने अपनी मर्मभेदिनी दृष्टि से लक्षित कर लिया कि महारानी गर्भावस्था में हैं। यह देखकर वह बोला– ये बुढऊ स्वयं तो हाथ से सृष्टि करते हैं, परंतु और लोगों के लिए जो प्रणाली इन्होंने बना दी है, वह कितनी अश्लील और लज्जाजनक है! इनकी खोपड़ी ही निराली है। और पक्षपात तो देखिए! पुरुष का तो एक बाल भी बाँका नहीं होता और स्त्री को दस महीने तक जो कष्ट ये भोगवाते हैं, सो वही जानती है।

शची महारानी की भ्रू–भंगिमा देखकर ब्रह्म समझ गए कि अब यहाँ भी पटरी नहीं बैठेगी। वे चंद्रमा के दरबार में जा पहुँचे। छिद्रान्वेषी भी पीछे लगा आया। उसने छूटते ही चंद्रमा से कहा– देखिए, बुढ़ऊ की करतूत! ये अपनी हरकतों से बाज नहीं आते। जहाँ आप पूर्णिमा पर पहुँचे कि ये लगते हैं आपको नख से खोंटने, और खोंटते–खोंटते जब तक आपको अमावस्या पर नहीं पहुँचा देते, तब तक उनके पेट का अन्न नहीं पचता। ये दुष्ट ऐसे हैं कि आपके चमकते हुए मुखमंडल में इन्होंने कलंक का धब्बा पोत दिया। उससे भी जी नहीं भरा, तो इन्होंने आपके लिए राहु गढ़कर रख दिया!

चंद्रमा की व्रक मुद्रा देखकर ब्रह्मा तारा लोक में आ पहुँचे। छिद्रान्वेषी भी उनके पीछे मौजूद था। उसने ताराओं को संबोधित कर कहा– जान पड़ता है, चंद्रमा गढ़ने के बाद ब्रह्मा ने हाथ झाड़ दिया और आप लोग राई की तरह आकाश में बिखर गए। जब चंद्रमा को रुपए के आकार का बनाया; तो आप लोगों को कम–से–कम दुअन्नी–चवन्नी भर भी तो बनाते! पर बेईमान बूढ़े इतना भी किया पार नहीं लगा!

ताराओं को अपने ऊपर छूटते देख ब्रह्म वहाँ से भागकर सूर्यलोक जा पहुँचे। छिद्रान्वेषी भी पिंड छोड़ने वाला नहीं था। उसने सूर्य से कहा–ब्रह्म स्वयं तो कमलासन पर बैठे रहते हैं और आपको लगातार घोड़े की तरह हाँके जा रहे हैं। रविवार को भी छुट्टी नहीं देते। सातों घोड़ियों को निरंतर हाँकते–हाँकते आपका चेहरा लाल हो गया है।

सूर्य के नेत्र से ज्वाला फॅटने लगी। यह देखकर ब्रह्मा वहाँ से भी भागे। क्रमशः अग्निलोक, वरुणलोक, यमलोक, सब जगह गए। मगर कहीं शरण नहीं मिली। छिद्रान्वेषी छाया की तरह सर्वत्र उनके पीछे लगा रहा उसने अग्नि को कहा–ब्रह्मा आपको सर्वदा जलाते रहते हैं। आपके मुँह से सात जीभें लगाने की इन्हें क्या जरूरत थी? इसीलिए तो आपको सर्वभक्षी बनना पड़ा है।

वरुण से कहा–ब्रह्मा ने दुनिया भर के मगर–घड़ियाल लेकर आप ही के साम्राजय में भर दिया है।

यम से कहा– यह ब्रह्मा खुद तो प्रजापति कहलाकर पुजाते हैं और आपको भैंसे पर चढ़ा, हाथ में कुल्हाड़ा दे हत्यारा बनाए हुए हैं।

ब्रह्मा ने देखा कि छिद्रान्वेषी के भड़काने से सभी देवता बागी होते चले जा रहे हैं, तो विष्णु की शरण में जा पहुँचे।

छिद्रान्वेषी वहाँ भी पहुँच गया। उसने विष्णु से कहा–महाराज! आप पालनकर्त्ता हैं। लेकिन जिस रफ्तार से ये ब्रह्मा सृष्टि की वृद्धि कर रहे हैं, उसे देखने से तो यही मालूम होता है कि कुछ दिनों में लोग आपके क्षीर समुद्र को सत्तू में घोलकर पी जाएँगे। ये बुढ़ऊ आपका घर फुटकाने में कुछ उठा नहीं रखते। शेषनाग और गरुड़ में इन्होंने जानी दुश्मनी पैदा कर है। और दुष्ट तो ऐसे हैं कि आपकी चार भुजाएँ देखकर इन्होंने सहस्त्रबाहु राक्षस उत्पन्न किया।

यह रवैया देखकर ब्रह्मा चुपचाप खिसककर लक्ष्मी के दरबार में आए। छिद्रान्वेषी वहाँ पहले ही पहुँच चुका था। उसने लक्ष्मी से कहा–बुढ़ऊ का विवके देखिए। आपकी सौत सरस्वती को तो इन्होंने हंसवाहिनी बना दिया। और आपके लिए इनको उल्लू छोड़कर और कुछ नहीं मिला।

लक्ष्मी महारानी की त्योरियाँ चढ़ते देखकर ब्रह्मा वहाँ से भी चंपत हो गए। वे शिवलोक में जा पहुँचे। छिद्रान्वेषी भी साथ ही लगा आया। उसने महादेवजी से कहा–भोले बाबा, ये चतुर्मुख हैं और आप पंचमुख हैं। सो देखकर यह जलते हैं। आपके प्रिय फूल आक–धतूर में इन्होंने जान–बूझकर सुगंध नहीं दी, ऐसे तो ये ईर्ष्यालु हैं! आपके ये पुराने शत्रु हैं। तभी तो इन्होंने कामदेव को उत्पन्न किया। लेकिन उससे हुआ क्या? वे स्वयं भस्म हो गए।

शिवजी का तृतीय नेत्र खुलने से पूर्व ही ब्रह्मा वहाँ से नौ–दो–ग्यारह हो गए। भागे–भागे सीधे अपने घर आ पहुँचे। आँगन में जाकर औंधे मुँह पड़ रहे।

ब्रह्माणी ने पूछा– आज क्या हुआ है? आपकी आठों आँखों से आठ आँसू बह रहे हैं! बात क्या है?

ब्रह्मा ने इशारे से बताकर कहा– देखो, वह आ रहा है। यह भयंकर प्राणी मुझे ले बीतेगा!

ब्रह्माणी ने कहा–आप अपना कमंडल कहाँ भूल आए? जल छींटकर शाप दे दीजिए, मृत्युलोक में चला जाएगा।

ब्रह्मा कमंडल लाने दौड़े। तब तक छिद्रान्वेषी ब्रह्माणी के पास आकर कहने लगा– यह ब्रह्मा अब बिल्कुल शिथिल हो गए हैं। इन्हें पेंशन लेकर बैठ जाना चाहिए। वृद्ध से कहीं सृष्टि का कार्य चला है? देखिए, इनकी जगह बैठकर मैं कैसा काम करता हूँ।

ब्रह्मा ने शाप देते हुए कहा–जाओ! अब मृत्युलोक में जाकर छिद्रान्वेषण करते रहो। दूसरों का दोष ही तुम्हारा आहार होगा। तुम्हारे वंशज पृथ्वी पर 'आलोचक' के नाम से प्रसिद्ध होंगे। ❐❐